सारांश

आपको याद होगा कि अपनी यात्रा के आरम्भ में हमने कहा था कि परमेश्वर के स्वभाव की खोज करना साहसपूर्ण कार्य है। हमें आशा है कि मार्ग में आने वाली कठिन चुनौतियों के बावजूद हम अपनी साहसिक यात्रा में मिलकर आगे बढ़ पाए हैं। हम मानते हैं कि यदि परमेश्वर ने स्वयं अपनी सृष्टि में, अपने पुत्र में, और बाइबल में अपने आपको प्रकट नहीं किया होता तो हम यहां तक नहीं पहुंच सकते थे। जो कुछ परमेश्वर ने अपने बारे में प्रकट नहीं किया अर्थात समय, उसके बारे में हम नहीं जान सकते! इससे हमें दो तथ्यों का पता चलता है। पहला, बिना उसकी सहायता के उसे जानने में हम पूरी तरह से असहाय हैं। दूसरा, हम सृष्टि से जानकर आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर है। बाइबल से हम जान सकते हैं कि परमेश्वर कैसा है और वह हमें कैसा देखना चाहता है। मिलकर अध्ययन करने के लिए हम बाइबल का व्यापक उपयोग इसी लिए करते हैं।

मेरा मानना है कि मेरी तरह, आप भी पिता के रूप में परमेश्वर की बहुपक्षीय भूमिका पर आश्चर्यचकित और भयभीत हुए होंगे। अपनी यात्राओं में समय की दिशा को मोड़ते हुए, लम्बे संकीर्ण दृश्यों ने परमेश्वर को अनन्त पिता, सृजनात्मक पिता, विश्वव्यापी पिता, चयनात्मक पिता और आत्मिक पिता के रूप में दिखाया है।

अदन की वाटिका में प्राचीन समय के कुहरों में से झांकते हुए पुरुष और स्त्री को उनकी मूल पवित्र अवस्था में जिसमें उनके पिता ने उन्हें बताया था, देखकर हम आनन्द से झूमने लगते हैं। उन्हें परमेश्वर की आज्ञा तोड़कर, दण्ड पाते और परिणामस्वरूप उससे दूर निकाले जाने को देखकर निराशा में डूब जाते हैं। पाप में गिरी मनुष्य जाति को फिर से बहाल करने के लिए परमेश्वर के धैर्य के काम को देखकर हमारी जान में जान आई थी। अनियन्त्रित भ्रष्टाचार के बावजूद परमेश्वर ने नूह और जहाज़ के द्वारा प्रलय से कुछ धर्मी लोगों को बचा लिया। मूर्तिपूजा और विधर्म के बावजूद, परमेश्वर ने अपनी महान परिकल्पना में इब्राहीम को बुलाया जिसके द्वारा उसने एक नई दिशा में अपने लोगों को ले जाना था (गलतियों 3:6-9)। मूसा में, हमने परमेश्वर को एक व्यवस्था के द्वारा सुरक्षित करते हुए देखा जो उन्हें अन्ततः मसायाह अर्थात ख्रिस्तुस तक ले जाने के लिए बनाई गई थी (गलतियों 3:23-25)।

फिर हमने संसार में परमेश्वर के सबसे अलग ढंग से उत्पन्न हुए पुत्र का पता लगाया। जब परमेश्वर के हिसाब से ''समय पूरा हुआ'' तो, हमने दोपहर के सूर्य से भी अधिक तेज के साथ उसके पुत्र को पृथ्वी पर आते देखा। वास्तव में, उसकी विलक्षणता, प्रताप, व्यक्तित्व, और महिमा इतने कायल करने वाले थे, इतना अधिक *ईश्वरीय* थे, कि संसार के पापों के लिए जब इस पवित्र और धर्मी पुरुष ने अपने आपको भेंट किया तो सूर्य की चमक भी अंधकार में बदल गई (मरकुस 15:33)। यह दृश्य इतना स्पष्ट, इतना प्रभावित करने वाला, ''दूसरे सांसारिक'' तत्वों से इतना अलग था कि रोमी अधिकारी भी जो यीशु के सामने खड़ा उसे मरते हुए देख रहा था, कहने लगा, ''सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था'' (मरकुस 15:39)।

हम एक अविश्वसनीय यात्रा कर रहे थे। अन्त में, हमने परमेश्वर को अपने आपको यीशु नासरी के पिता के रूप में चित्रित करते देखा था, परन्तु क्या यह कहानी का अन्त है? क्या यीशु संसार में केवल यही दिखाने के लिए आया था कि परमेश्वर उसका आत्मिक पिता है? यह प्रकाशन चौंका देने वाला है। परन्तु कुछ और भी है जो हमें तनाव में डालता और कृतज्ञता और धन्यवाद के साथ हमारे मनों को ऊंचाई पर पहुंचाता है। अब हम जानते हैं कि यीशु के आत्मिक पिता के रूप में, परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट कर दिया ताकि हम भी, *अपने* आत्मिक पिता के रूप में परमेश्वर को पा सकें। जब तक समय चलता रहेगा, तब तक इससे बड़ा कोई काम नहीं होगा। आने वाली शताब्दियों में, कोई ऐसा युग नहीं आएगा जिसमें बाइबल जैसी किसी दूसरी पुस्तक में पिता की किसी अन्य भूमिका में परमेश्वर को दिखाया जाएगा। मसीही युग में, हम छुटकारे की उसकी महान योजना के चरम का अनुभव कर रहे हैं। यह एक आश्चर्यचकित करने वाली योजना है। मनुष्यों से मेल मिलाप करने का परमेश्वर का यह अन्तिम ढंग है। परमेश्वर ने मसीह में इसके पूरा होने को संसार की रचना से भी पहले देखा था:

> जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया (इफिसियों 1:4-6)।

अनुग्रहकारी, प्रेमी पिता का यह कितना महान और अद्‌भुत कार्य है! उसने हमारे लिए उसकी संतान बनने का मार्ग उपलब्ध करवा दिया है। वह हमारा आत्मिक पिता बनना चाहता है। जैसे मनुष्य जाति को बनाने के समय के आरम्भ में उसने इसे पवित्र बनाया था, वैसे ही वह हमें फिर से बनाना चाहता है। वह चाहता है कि हम उसके परिवार में शामिल हों। वह चाहता है कि हम ''घर लौट आएं।''

हम उसके अनुग्रहकारी प्रस्ताव को कैसे स्वीकार करते हैं? हम उसकी अतुलनीय प्रेम

भेंट अर्थात मसीह को ग्रहण करते हैं (यूहन्ना 8:24)। उसे परमेश्वर का पुत्र मानकर, हम मन फिराकर उसकी ओर मुड़ते हैं (लूका 13:1-5) और अपने पापों की क्षमा के लिए उस में बपतिस्मा लेते हैं (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 2:38, 39)। इस गाड़े जाने से हम पाप के लिए मरते हैं, और नया जन्म लेकर नया जीवन जीने के लिए जी उठते हैं (यूहन्ना 3:3-5; गलतियों 3:26-29; रोमियों 6:1-12)। इस तरह मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करके, हम जानते हैं कि *हमें* स्वर्ग में अपने आत्मिक पिता के सामने स्वीकार कर लिया जाएगा (मत्ती 10:32, 33)। मसीह में हम परमेश्वर की ''नई सृष्टि'' बन गए हैं।

> सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उस के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया (2 कुरिन्थियों 5:17-19क)।

सौदा हो चुका है। हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट करने की परमेश्वर की योजना अद्‌भुत ढंग से पूरी हो चुकी है। जब हम ''मसीह में संसार को अपने साथ मिलाने की'' परमेश्वर की पेशकश को स्वीकार करते हैं, तो वह अपने पुत्र यीशु के द्वारा हमारा आत्मिक पिता बन जाता है। हमारे अनन्त भाग्य के लिए कितनी बड़ी सम्भावना है। आत्मिक पिता हमारा शासक है, यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता, भाई और मित्र, तो हम परमेश्वर के काम का भाग बन जाते हैं जो इतना भयभीत करने वाला है कि सारी सृष्टि के समझदार जीव परमेश्वर की अलौकिक बुद्धि से स्तब्ध रह जाते हैं। इफिसियों 3:10-12 कहता है,

> ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। जिस में हम को उन पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है।